शोधामृत
(कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका)

ISSN : 3048-9296 (Online)
3049-2890 (Print)
IIFS Impact Factor-4.0
Vol.-3; issue-2 (April-June) 2026
Page No- 07-12
©2026 Shodhaamrit
https://shodhaamrit.gyanvividha.com

Author's :

1. अर्पणा जाम्भुलकर
शोधार्थी

2. डॉ. डी. लक्ष्मी
शोध निर्देशक, प्राध्यापक भिलाई मैत्री कॉलेज, रिसाली सेक्टर, भिलाई.

3. डॉ. नीरा पाण्डेय
सह शोध शोध निर्देशक, विभागाध्यक्ष (शिक्षा विभाग), श्री शंकराचार्य महाविद्यालय, जुनवानी, भिलाई (छ.ग.).

Corresponding Author :

अर्पणा जाम्भुलकर
शोधार्थी

ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों में अध्ययनरत बालिकाओ के शालेय वातावरण एवं बालिका सशक्तिकरण के मध्य सहसंबंध का विश्लेषण

सारांश : प्रस्तुत शोध का उद्देश्य ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों में अध्ययनरत बालिकाओ के शालेय वातावरण एवं बालिका सशक्तिकरण के मध्य सहसंबंध का विश्लेषण करना है। इस अध्ययन में कुल 200 बालिकाओं को शामिल किया गया, जिनमें 100 ग्रामीण एवं 100 शहरी क्षेत्र की बालिकाएँ सम्मिलित थीं। न्यादर्श का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया। आँकड़ों का संकलन शालेय वातावरण मापनी सिंह एवं इमाम (2010)एवं बालिका सशक्तिकरण मापनी सिशोदिया एवं सिंह 2010 के माध्यम से किया गया। प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण पियर्सन सहसंबंध गुणांक तथा फिशर Z-परीक्षण के द्वारा किया गया।अध्ययन के परिणामों से ज्ञात हुआ कि समस्त न्यादर्श में शालेय वातावरण एवं बालिका सशक्तिकरण के मध्य धनात्मक एवं सांख्यिकीय रूप से सार्थक सहसंबंध (r = 0.21) पाया गया। ग्रामीण क्षेत्र में यह सहसंबंध नगण्य एवं असार्थक (r = 0.09) पाया गया, जबकि शहरी क्षेत्र में मध्यम स्तर का धनात्मक एवं अत्यंत सार्थक सहसंबंध (r = 0.55) पाया गया। इसके अतिरिक्त, ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के सहसंबंधों के मध्य फिशर Z-परीक्षण द्वारा सार्थक अंतर (Z = -3.63) पाया गया।इस प्रकार निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि शालेय वातावरण बालिकाओं के सशक्तिकरण को प्रभावित करने वाला महत्वपूर्ण कारक है, विशेषकर शहरी क्षेत्रों में इसका प्रभाव अधिक स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

मुख्य शब्द (Keywords) : बालिका सशक्तिकरण, शालेय वातावरण, सहसंबंध, ग्रामीण, शहरी।

प्रस्तावना : वर्तमान समय में शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का प्रमुख साधन माना जाता है, जिसके माध्यम से व्यक्ति के समग्र विकास को सुनिश्चित किया जा सकता है। विशेष रूप से बालिकाओं की शिक्षा एवं सशक्तिकरण आज के समाज की महत्वपूर्ण आवश्यकता बन गई है। बालिका सशक्तिकरण का तात्पर्य केवल शैक्षिक उपलब्धि से नहीं, बल्कि आत्मविश्वास, निर्णय क्षमता, आत्मनिर्भरता तथा सामाजिक सहभागिता से भी है। जब बालिकाएँ इन गुणों से युक्त होती हैं, तब वे अपने जीवन से संबंधित निर्णय स्वतंत्र रूप से लेने में सक्षम होती हैं।

बालिकाओं के सशक्तिकरण में विभिन्न कारकों की भूमिका होती है, जिनमें शालेय वातावरण एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। विद्यालय वह स्थान है जहाँ बालिकाएँ न केवल ज्ञान अर्जित करती हैं, बल्कि सामाजिक व्यवहार, मूल्य, अनुशासन एवं नेतृत्व जैसे गुणों का भी विकास करती हैं। यदि विद्यालय का वातावरण सहयोगात्मक, सुरक्षित एवं प्रेरणादायक हो, तो बालिकाओं में आत्मविश्वास एवं सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होता है, जो उनके सशक्तिकरण को प्रोत्साहित करता है।

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के विद्यालयों में उपलब्ध संसाधनों, शिक्षण पद्धतियों तथा सामाजिक परिस्थितियों में भिन्नता पाई जाती है, जिसका प्रभाव बालिकाओं के अनुभवों एवं उनके विकास पर पड़ता है। शहरी क्षेत्रों में सामान्यतः अधिक सुविधाएँ एवं अवसर उपलब्ध होते हैं, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में संसाधनों की सीमाएँ देखने को मिलती हैं। ऐसे में यह जानना आवश्यक हो जाता है कि शालेय वातावरण बालिकाओं के सशक्तिकरण को किस प्रकार प्रभावित करता है तथा यह प्रभाव ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में किस सीमा तक भिन्न है।

इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन में शालेय वातावरण एवं बालिका सशक्तिकरण के मध्य संबंध का विश्लेषण किया गया है, साथ ही ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के संदर्भ में इस संबंध का तुलनात्मक अध्ययन भी किया गया है। यह अध्ययन न केवल शैक्षिक क्षेत्र में उपयोगी सिद्ध होगा, बल्कि नीति-निर्माताओं एवं शिक्षकों को भी बालिकाओं के सशक्तिकरण हेतु उपयुक्त वातावरण निर्माण में दिशा प्रदान करेगा।

बालिका सशक्तिकरण : बालिका सशक्तिकरण से अभिप्राय उस प्रक्रिया से है जिसके माध्यम से बालिकाएँ अपने जीवन से संबंधित निर्णय लेने में सक्षम बनती हैं तथा सामाजिक, शैक्षिक, आर्थिक एवं मनोवैज्ञानिक स्तर पर आत्मनिर्भरता प्राप्त करती हैं। यह अवधारणा केवल शिक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें आत्मविश्वास, अधिकारों के प्रति जागरुकता, अवसरों तक पहुँच तथा सामाजिक सहभागिता जैसे विभिन्न आयाम सम्मिलित होते हैं। सशक्तिकरण के माध्यम से बालिकाएँ अपने व्यक्तित्व का समग्र विकास करती हैं और जीवन की परिस्थितियों का सामना आत्मविश्वास एवं स्वतंत्रता के साथ करती हैं।

आधुनिक समाज में बालिका सशक्तिकरण को सामाजिक विकास का आधार माना जाता है, क्योंकि जब बालिकाएँ सशक्त होती हैं, तब वे न केवल अपने जीवन को सुदृढ़ बनाती हैं, बल्कि परिवार एवं समाज के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। सशक्त बालिकाएँ अपने अधिकारों के प्रति सजग रहती हैं, सामाजिक असमानताओं का विरोध करने में सक्षम होती हैं तथा अपने जीवन के महत्वपूर्ण निर्णयों में सक्रिय सहभागिता करती हैं।

इस संदर्भ में **मार्कस आर एवं पेज ई (2016)** ने अपने अध्ययन में यह प्रतिपादित किया कि बालिकाओं के सशक्तिकरण में विद्यालय एवं परिवार दोनों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। उनके अनुसार, सहयोगात्मक एवं प्रोत्साहनकारी वातावरण बालिकाओं की निर्णय क्षमता, आत्मविश्वास तथा सामाजिक सहभागिता को सुदृढ़ करता है, जिससे उनका समग्र सशक्तिकरण संभव होता है।

इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि बालिका सशक्तिकरण एक बहुआयामी एवं सतत प्रक्रिया है, जिसमें पारिवारिक एवं शैक्षिक वातावरण दोनों का समन्वित योगदान आवश्यक है।

ग्रामीण क्षेत्र से अभिप्राय ऐसे भौगोलिक क्षेत्रों से है जहाँ जनसंख्या घनत्व अपेक्षाकृत कम होता है तथा लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि एवं उससे संबंधित गतिविधियाँ होती हैं। इन क्षेत्रों में आधारभूत सुविधाएँ जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य एवं परिवहन अपेक्षाकृत सीमित होती हैं तथा सामाजिक संरचना पारंपरिक होती है। "ग्रामीण क्षेत्र वह सामाजिक इकाई है जहाँ जीवन शैली पारंपरिक होती है, संसाधनों की उपलब्धता सीमित होती है तथा लोग मुख्यतः कृषि पर निर्भर रहते हैं।" **सिंह ए. के. (2012)**,

शहरी क्षेत्र से अभिप्राय ऐसे क्षेत्रों से है जहाँ जनसंख्या घनत्व अधिक होता है, औद्योगिक एवं सेवा क्षेत्र का विकास अधिक होता है तथा शिक्षा, स्वास्थ्य एवं परिवहन जैसी सुविधाएँ विकसित रुप में उपलब्ध होती हैं। इन क्षेत्रों में जीवन शैली अपेक्षाकृत आधुनिक एवं गतिशील होती है। "शहरी क्षेत्र वह स्थान है जहाँ औद्योगीकरण, आधुनिकीकरण एवं विविध सेवाओं का विकास होता है, जिससे जीवन स्तर अपेक्षाकृत उच्च होता है।" **शर्मा आर. के. (2015)**

शासकीय उच्चतर विद्यालय : शासकीय उच्चतर विद्यालय से अभिप्राय ऐसे शैक्षणिक संस्थान से है जिसका संचालन एवं प्रबंधन सरकार द्वारा किया जाता है तथा जहाँ विद्यार्थियों को माध्यमिक (कक्षा 9–10) एवं उच्चतर माध्यमिक (कक्षा 11–12) स्तर तक की शिक्षा प्रदान की जाती है। इन विद्यालयों का मुख्य उद्देश्य सभी वर्गों के विद्यार्थियों को समान एवं सुलभ

शि शासकीय उच्चतर विद्यालय से अभिप्राय ऐसे शैक्षणिक संस्थानों से है जिनका संचालन एवं प्रबंधन सरकार द्वारा किया जाता है तथा जहाँ विद्यार्थियों को माध्यमिक (कक्षा 9–10) एवं उच्चतर माध्यमिक (कक्षा 11–12) स्तर तक की शिक्षा प्रदान की जाती है। इन विद्यालयों का प्रमुख उद्देश्य समाज के सभी वर्गों, विशेष रुप से आर्थिक एवं सामाजिक रुप से वंचित वर्गों को समान एवं सुलभ शिक्षा उपलब्ध कराना है।

प्रस्तुत अध्ययन के संदर्भ में शासकीय उच्चतर विद्यालयों का विशेष महत्व है, क्योंकि ये संस्थान ग्रामीण एवं शहरी दोनों क्षेत्रों की बालिकाओं को शिक्षा से जोड़ने का कार्य करते हैं। इन विद्यालयों का शालेय वातावरण, शिक्षण पद्धति, शिक्षक-विद्यार्थी संबंध एवं उपलब्ध संसाधन बालिकाओं के सशक्तिकरण को प्रत्यक्ष रुप से प्रभावित करते हैं। एक सहयोगात्मक एवं सुरक्षित विद्यालयी वातावरण बालिकाओं में आत्मविश्वास, आत्म-सम्मान एवं निर्णय क्षमता के विकास में सहायक होता है।

इस संदर्भ में **लेक्रॉय सी डब्ल्यू (2004)** के अध्ययन में पाया गया कि सशक्तिकरण उन्मुख शैक्षिक वातावरण बालिकाओं के आत्मसम्मान एवं सामाजिक सहभागिता को बढ़ाता है। इसी प्रकार **महालिंगम आर (2012)** ने अपने शोध में स्पष्ट किया कि विद्यालयी अनुभव एवं वातावरण बालिकाओं की आत्मधारणा एवं सशक्तिकरण को महत्वपूर्ण रुप से प्रभावित करते हैं, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में।अतः स्पष्ट होता है कि शासकीय उच्चतर विद्यालयों का शालेय वातावरण बालिकाओं के सशक्तिकरण को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक है।

साहित्य समीक्षा : विभिन्न शोधों से यह स्पष्ट होता है कि बालिका सशक्तिकरण एवं शालेय वातावरण के मध्य घनिष्ठ एवं सार्थक संबंध विद्यमान है। **स्टॉर्मक्विस्ट एन.पी. (2002)** के अनुसार शिक्षा बालिकाओं के सामाजिक सशक्तिकरण का एक प्रभावी माध्यम है, जो उनके आत्मनिर्भरता एवं सामाजिक पहचान को विकसित करती है। **लेक्रॉय सी डब्ल्यू (2004)** ने अपने अध्ययन में पाया कि सशक्तिकरण उन्मुख शैक्षिक कार्यक्रम एवं सकारात्मक विद्यालयी वातावरण बालिकाओं के आत्मसम्मान एवं सामाजिक सहभागिता को बढ़ाते हैं।

इसी क्रम में **एन. कबीर (2005)** ने सशक्तिकरण को संसाधनों, अवसरों एवं निर्णय लेने की क्षमता से संबंधित प्रक्रिया बताया, जबकि **सुब्रह्मण्यम आर (2005)** ने यह प्रतिपादित किया कि लिंग-संवेदनशील शालेय वातावरण बालिकाओं के सशक्तिकरण के लिए अत्यंत आवश्यक है। **राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (2005)** के अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला गया कि सकारात्मक विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों के समग्र विकास के साथ-साथ बालिकाओं के आत्मविश्वास एवं सहभागिता को भी सुदृढ़ करता है।

आगे **चंद्रा राकेश (2007)** ने यह स्पष्ट किया कि शिक्षा एवं विद्यालयी वातावरण बालिकाओं के सशक्तिकरण के प्रमुख साधन हैं। **बंद्योपाध्याय माधुमिता (2009)** ने अपने अध्ययन में पाया कि विद्यालय में उपलब्ध संसाधन, शिक्षक का व्यवहार एवं सहायक वातावरण बालिकाओं की सहभागिता एवं आत्मविश्वास को प्रभावित करते हैं।

इसके अतिरिक्त **रोलैंड फ्रायर (2010)** के अध्ययन में यह पाया गया कि विद्यालय की गुणवत्ता एवं शैक्षिक वातावरण विद्यार्थियों की उपलब्धि एवं आत्मविश्वास को प्रभावित करते हैं, जो सशक्तिकरण से संबंधित है। **महालिंगम आर (2012)** ने ग्रामीण बालिकाओं के विद्यालयीय अनुभवों का अध्ययन करते हुए पाया कि विद्यालय का वातावरण उनकी आत्मधारणा एवं सामाजिक पहचान को प्रभावित करता है।

इसी प्रकार **मलकॉम्सन के. (2013)** ने यह निष्कर्ष निकाला कि सकारात्मक विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों के भावनात्मक एवं सामाजिक विकास को प्रोत्साहित करता है। अंततः **यूनेस्को (2015)** की रिपोर्ट में यह प्रतिपादित किया गया कि सुरक्षित, समावेशी एवं सहयोगात्मक शालेय वातावरण बालिकाओं के शैक्षिक विकास के साथ-साथ उनके सामाजिक सशक्तिकरण को भी बढ़ावा देता है।

अध्ययन कि सार्थकता : प्रस्तुत अध्ययन बालिका सशक्तिकरण एवं शालेय वातावरण के मध्य संबंध को स्पष्ट करता है। यह शोध विशेष रुप से ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में उपलब्ध शैक्षिक वातावरण के अंतर को समझने में सहायक है। इसके माध्यम से यह ज्ञात होता है कि विद्यालय का वातावरण बालिकाओं के आत्मविश्वास, निर्णय क्षमता एवं सामाजिक सहभागिता को किस प्रकार प्रभावित करता है। अध्ययन के निष्कर्ष शिक्षकों, अभिभावकों एवं नीति-निर्माताओं के लिए उपयोगी सिद्ध होंगे तथा बालिकाओं के सशक्तिकरण हेतु सकारात्मक शैक्षिक वातावरण के निर्माण में मार्गदर्शन प्रदान करेंगे। *"यह अध्ययन बालिका सशक्तिकरण में शालेय वातावरण की भूमिका को स्पष्ट करता है।"*

उद्देश्य :

- **शालेय वातावरण एवं बालिका सशक्तिकरण के मध्य सहसंबंध का अध्ययन करना।**
- **ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत बालिकाओं के शालेय वातावरण एवं सशक्तिकरण के मध्य सहसंबंध का अध्ययन करना।**
- **शहरी विद्यालयों में अध्ययनरत बालिकाओं के शालेय वातावरण एवं सशक्तिकरण के मध्य सहसंबंध का अध्ययन करना।**
- **ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों में शालेय वातावरण एवं बालिका सशक्तिकरण के सहसंबंध का अध्ययन करना।**

परिकल्पनाएँ :

H_{01} शालेय वातावरण एवं बालिका सशक्तिकरण के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं पाया जायेगा।

H_{02} ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत बालिकाओं के शालेय वातावरण एवं सशक्तिकरण के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं पाया जायेगा।

H_{03} शहरी विद्यालयों में अध्ययनरत बालिकाओं के शालेय वातावरण एवं सशक्तिकरण के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं पाया जायेगा।

H_{04} ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों में अध्ययनरत बालिकाओं के शालेय वातावरण एवं बालिका सशक्तिकरण के सहसंबंध में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

अध्ययन कि परिसीमा :

1. प्रस्तुत अध्ययन राजनांदगांव जिले के अंतर्गत आने वाले चार विकासखण्ड के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्राओं तक सीमित किया गया है।
2. प्रस्तुत अध्ययन राजनांदगांव जिले के अंतर्गत ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय एवं शहरी क्षेत्र के विद्यालय में अध्ययनरत बालिकाओं को प्रतिदर्श के लिए चयन किया गया है।
3. प्रस्तुत अध्ययन शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में कक्षा 11वीं में अध्ययनरत बालिकाओं तक सीमित है।
4. इस शोध कार्य में राजनांदगांव जिले के अंतर्गत ग्रामीण शासकीय विद्यालय के 100 एवं शहरी शासकीय विद्यालय में अध्ययनरत 100 बालिकाओं को लिया गया है।
5. प्रस्तुत अध्ययन केवल बालिकाओं के सशक्तिकरण एवं शालेय वातावरण पर पड़ने वाले प्रभाव तक सीमित है।

जनसँख्या : अध्ययन हेतु राजनांदगाव जिले में स्थित 4 विकासखंड (छुरिया,डोंगरगढ़ ,राजनांदगाव एवं डोंगरगावं)के अंतर्गत आने वाले ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों को जनसंख्या के रूप में लिया गया हैं।

शोध प्रारूप : अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है।

न्यादर्श : शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय विद्यालयों में अध्यययनरत कक्षा 11वी के 200 बालिकाओ का चयन याद्दच्छिक विधि से किया गया।

उपकरण :

बालिका सशक्तिकरण : प्रस्तुत अध्ययन में आश्रित चर के मापन के लिए **सिसोदिया एवं सिंह** (2010)द्वारा निर्मित बालिका सशक्तिकरण मापनी का का उपयोग किया गया है। इसमें कुल 7 आयाम है। अंको का वितरण अधिक से कम कि ओर किया गया है।

शालेय वतावरण : प्रस्तुत अध्ययन में स्वतंत्र चर के मापन के लिए **सिंह एवं इमाम(2010)** द्वारा निर्मित शालेय वातावरण मापनी का का उपयोग किया गया है। शालेय वातावरण में क्षेत्र के रुप में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र को लिया गया। स्वतंत्र चर में शालेय वातावरण मापनी से प्राप्त आकड़ो के आधार पर उच्च और निम्न समूह में विभाजित किया गया है। साथ ही क्षेत्र के रुप में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र को लिया गया हैं। मापनी के कथनों को Likert स्केल पर अंकित किया गया तथा प्राप्त स्कोर के आधार पर शालेय वातावरण का विश्लेषण किया गया।"

संखियिकी विश्लेषण : प्रस्तुत अध्ययन में उपरोक्त परिकल्पना कि जाँच हेतु ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के शासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 11 वी कि बालिकाओ को न्यादर्श के रूप में चयन कर एवं आकड़ो को एकत्रित कर पियर्सन सह सम्बन्ध r मान के आधार पर किया गया है। एवं सहसंबंध अंतर फिशर Z मान से किया गया है।

$H_0$1 .शालेय वातावरण एवं बालिका सशक्तिकरण के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं पाया जायेगा ।

सारिणी 1 शालेय वातावरण एवं बालिका सशक्तिकरण के मध्य सहसंबंध r मान

चर	बालिकाओं की संख्या (N)	r (सहसंबंध)
शालेय वातावरण एवं बालिका सशक्तिकरण	200	0.21

df = 198, p = 0.003 (0.01 स्तर पर सार्थक)

उपरोक्त सारिणी से प्रतिपादित होता है, कि शालेय वातावरण एवं बालिका सशक्तिकरण के मध्य r = 0.21 का धनात्मक सहसंबंध पाया गया। यह सहसंबंध df = 198 पर p = 0.003 के साथ 0.01 स्तर पर सांख्यिकीय रूप से सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है तथा निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि शालेय वातावरण का बालिका सशक्तिकरण पर सकारात्मक सार्थक संबंध पाया गया।

H_{02} ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत बालिकाओं के शालेय वातावरण एवं सशक्तिकरण के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं पाया जायेगा।

सारिणी-2 ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत बालिकाओं के शालेय वातावरण एवं सशक्तिकरण के मध्य सहसंबंध r मान

चर	बालिकाओं की संख्या (N)	r (सहसंबंध)
शालेय वातावरण एवं बालिका सशक्तिकरण	100	0.09

df = 98, p = 0.34 असार्थक

उपरोक्त सारिणी से प्रतिपादित होता है कि ग्रामीण क्षेत्र में शालेय वातावरण एवं बालिका सशक्तिकरण के मध्य r = 0.09 का अत्यंत कमजोर सहसंबंध पाया गया। यह सहसंबंध df = 98 पर p = 0.34 होने के कारण सांख्यिकीय रूप से असार्थक है। अतः यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि ग्रामीण क्षेत्र में शालेय वातावरण का बालिका सशक्तिकरण पर कोई महत्वपूर्ण सार्थक संबंध नहीं पाया गया तथा शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

H_{03} शहरी विद्यालयों में अध्ययनरत बालिकाओं के शालेय वातावरण एवं सशक्तिकरण के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं पाया जायेगा।

सारिणी 3 शहरी विद्यालयों में अध्ययनरत बालिकाओं के शालेय वातावरण एवं सशक्तिकरण के मध्य सहसंबंधका r मान

चर	बालिकाओं की संख्या (N)	r (सहसंबंध)
शालेय वातावरण एवं बालिका सशक्तिकरण	100	0.55

df = 98, p <0.000 0.01 स्तर पर सार्थक

उपरोक्त सारिणी से प्रतिपादित होता है कि शहरी क्षेत्र में शालेय वातावरण एवं बालिका सशक्तिकरण के मध्य r = 0.55 का मध्यम से उच्च स्तर का धनात्मक सहसंबंध पाया गया। यह सहसंबंध df = 98 पर p = 0.000 के साथ 0.01 स्तर पर सांख्यिकीय रूप से अत्यंत सार्थक है। अतः यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि शहरी क्षेत्र में शालेय वातावरण का बालिका सशक्तिकरण पर महत्वपूर्ण एवं सकारात्मक सार्थक संबंध पड़ता है तथा शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।"

H_{04} ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों में अध्ययनरत शालेय वातावरण एवं बालिका सशक्तिकरण के मध्य सहसंबंध में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

सारिणी 4 ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों में शालेय वातावरण एवं बालिका सशक्तिकरण के सहसंबंध अंतर का Z मान

तुलना	Z मान
ग्रामीण बनाम शहरी	-3.63

IZI > 1.96, अतः अंतर 0.01 स्तर पर सार्थक है

"उपरोक्त सारिणी से प्रतिपादित होता है कि ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के सहसंबंधों के मध्य Z = -3.63 प्राप्त हुआ, जिसका परिमाण IZI = 3.63 है, जो 1.96 से अधिक है। अतः यह अंतर 0.01 स्तर पर सांख्यिकीय रूप से सार्थक है। इसलिए यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों में शालेय वातावरण एवं बालिका सशक्तिकरण के सहसंबंध में महत्वपूर्ण अंतर पाया गया। यह अंतर व्यावहारिक रूप से भी महत्वपूर्ण है अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।"

सुझाव :

1. प्रत्येक विद्यालय में बालिकाओं के लिए विशेष क्लब बनाए जाएँ, जहाँ वे नेतृत्व, निर्णय क्षमता एवं आत्मविश्वास विकसित कर सकें।
2. बड़ी कक्षाओं की छात्राएँ छोटी कक्षाओं की बालिकाओं का मार्गदर्शन करें, जिससे सहयोगात्मक वातावरण विकसित हो।
3. विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल माध्यम (smart class, videos) के द्वारा जागरुकता एवं सीखने के अवसर बढ़ाए जाएँ।
4. विद्यालयों में समय-समय पर शालेय वातावरण का मूल्यांकन (audit) किया जाए, ताकि कमियों को पहचानकर सुधार किया जा सके।
5. बालिकाओं के लिए नियमित रुप से जीवन कौशल, आत्मरक्षा एवं करियर मार्गदर्शन सत्र आयोजित किए जाएँ।

निष्कर्ष : प्रस्तुत अध्ययन के परिणामों से यह स्पष्ट रुप से प्रतिपादित होता है कि शालेय वातावरण एवं बालिका सशक्तिकरण के मध्य समस्त नमूने में धनात्मक एवं सांख्यिकीय रुप से सार्थक सहसंबंध पाया गया। यह निष्कर्ष दर्शाता है कि विद्यालय का अनुकूल एवं सहयोगात्मक वातावरण बालिकाओं के आत्मविश्वास, निर्णय क्षमता एवं सामाजिक सहभागिता को सुदृढ़ करता है।

क्षेत्रवार विश्लेषण से ज्ञात हुआ कि ग्रामीण क्षेत्र में यह सहसंबंध अत्यंत कमजोर एवं असार्थक रहा, जबकि शहरी क्षेत्र में मध्यम से उच्च स्तर का धनात्मक एवं अत्यंत सार्थक सहसंबंध पाया गया। यह अंतर इस बात की ओर संकेत करता है कि शालेय वातावरण का प्रभाव क्षेत्रीय परिस्थितियों के अनुसार भिन्न-भिन्न रुप में परिलक्षित होता है।

यह निष्कर्ष **एन.कबीर (2005)** के विचारों से समर्थित है, जिनके अनुसार सशक्तिकरण संसाधनों, अवसरों एवं निर्णय क्षमता से संबंधित एक बहुआयामी प्रक्रिया है, जिसमें शिक्षा एक महत्वपूर्ण माध्यम है। इसी प्रकार **महालिंगम (2012)** ने भी यह पाया कि विद्यालयीय वातावरण बालिकाओं की आत्मधारणा एवं सामाजिक पहचान को प्रभावित करता है।

साथ ही **यूनेस्को (2015)** की रिपोर्ट में यह प्रतिपादित किया गया है कि सुरक्षित, समावेशी एवं सहयोगात्मक शालेय वातावरण बालिकाओं के शैक्षिक विकास के साथ-साथ उनके सामाजिक सशक्तिकरण को भी बढ़ावा देता है।

अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि शालेय वातावरण बालिका सशक्तिकरण का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है। यदि विद्यालयों में सहयोगात्मक वातावरण, बालिका सशक्तिकरण कार्यक्रम, डिजिटल शिक्षण एवं जीवन कौशल विकास को प्रभावी रुप से लागू किया जाए, तो बालिकाओं के समग्र सशक्तिकरण को सुदृढ़ किया जा सकता है, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में इसके लिए विशेष प्रयासों की आवश्यकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. **Bandyopadhyay, M. (2009).** *Gender and education in India: Issues and concerns*. New Delhi: NUEPA.
2. **Chandra, R. (2007).** *Women empowerment in India: Milestones and challenges*. New Delhi: PACS Programme.
3. **Fryer, R. G. (2010).** Financial incentives and student achievement: Evidence from randomized trials. *Quarterly Journal of Economics, 126*(4), 1755–1798.
4. **Kabeer, N. (2005).** Gender equality and women's empowerment: A critical analysis of the third millennium development goal. *Gender & Development, 13*(1), 13–24.
5. **LeCroy, C. W. (2004).** Evaluation of an empowerment program for early adolescent girls. Adolescence, 39(155), 427–441.
6. **Mahalingam, R. (2012).** Gender expectations and the school experience of rural girls in India. *Journal of Gender Studies, 21*(1), 23–34.
7. **NCERT. (2005).** *National curriculum framework (NCF 2005)*. New Delhi: Author.
8. Stromquist, N. P. (2002). *Education in a globalized world: The connectivity of economic power, technology, and knowledge*. Lanham, MD: Rowman & Littlefield.
9. **UNESCO. (2015).** *Education for all 2000–2015: Achievements and challenges*. Paris: UNESCO.

•